**COHERENCE** – The Multidisciplinary Research Journal ISSN: 0976-5301
Volume No: 15, Issue No: 2, Year: 2024 (July-December) Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
PP: 66-74 Journal Website www.coherencejournal.in

# वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की भूमिका

**प्रमोद कुमार साह**

(शोधार्थी)

राजनीतिक विज्ञान विभाग,ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर दरभंगा।

## सारांश

महात्मा गॉधी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यक्रम भारतीय समाज और राजनीति के नैतिक पुनर्निर्माण का आधार रहे हैं। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में जब लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक विभाजन, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, हिंसा, धार्मिक कट्टरता तथा पर्यावरण संकट जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। गांधीजी का मानना था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज का नैतिक, आर्थिक और सामाजिक उत्थान भी आवश्यक है। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में ग्राम स्वराज, स्वदेशी, खादी, अस्पृश्यता उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण, सांप्रदायिक सद्भाव, बुनियादी शिक्षा, स्वच्छता तथा आत्मनिर्भरता जैसे तत्व प्रमुख थे। वर्तमान समय में "आत्मनिर्भर भारत", ग्रामीण विकास, महिला भागीदारी, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरण संरक्षण जैसी नीतियों में गांधीवादी विचारों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। राजनीतिक असहिष्णुता और वैचारिक संघर्ष के दौर में गांधी का सत्य, अहिंसा और संवाद का सिद्धांत लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकता है। यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम आज के राजनीतिक एवं सामाजिक संकटों के समाधान में किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकलता है कि गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम केवल ऐतिहासिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि वर्तमान भारत में सामाजिक समरसता, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा और सतत विकास के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। इसलिए समकालीन राजनीति में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों का पुनर्मूल्यांकन एवं प्रभावी क्रियान्वयन समय की आवश्यकता है।

**कीवर्ड (Keywords) :** गांधीवाद, रचनात्मक कार्यक्रम, सर्वोदय, स्वराज, विकेंद्रीकरण, सांप्रदायिक सद्भाव, खादी, ग्राम स्वराज, नई तालीम, महिला सशक्तिकरण, सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, अस्पृश्यता उन्मूलन, स्वदेशी, सत्याग्रह, अहिंसा, स्थानीय स्वशासन, आत्मनिर्भरता

## परिचय :

महात्मा गांधी केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, वे एक ऐसे दार्शनिक और समाज सुधारक थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक सामाजिक पुनर्निर्माण के अभियान के रूप में देखा। उनके द्वारा प्रतिपादित "रचनात्मक कार्यक्रम" (Constructive Programme) केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष का एक उपकरण मात्र नहीं था, बल्कि यह एक समग्र


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पुनर्जागरण का खाका था। गांधीजी का मानना था कि रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए धीरे-धीरे हम स्वराज्य का पुनर्निर्माण कर लेंगे। वस्तुतः यह आजादी प्राप्त करने के साथ-साथ आजादी को बनाए रखने की योजना थी, इसलिए इसकी प्रासंगिकता वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में भी बनी हुई है।[1]

गांधी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम को 1941 में एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया, जिसे 1945 में संशोधित किया गया। इसमें प्रारंभ में 13 बिंदु थे, जिनमें बाद में पाँच और जोड़कर कुल 18 बिंदुओं का एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया। गांधीजी ने स्वयं लिखा था कि "रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आजादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है। उसकी पूरी-पूरी सिद्धि ही संपूर्ण स्वतंत्रता है"।[2]

वर्तमान समय में जब भारत और विश्व अनेक चुनौतियों—सांप्रदायिक तनाव, आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट, बेरोजगारी, सामाजिक विघटन और राजनीतिक ध्रुवीकरण—का सामना कर रहे हैं, गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। प्रस्तुत लेख में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों के विभिन्न आयामों, उनके वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में योगदान तथा उनकी सीमाओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें गांधी के मूल लेख, विभिन्न शोध-पत्र, पुस्तकें एवं समकालीन विश्लेषण शामिल हैं।

**गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का दार्शनिक आधार**

**स्वराज की अवधारणा और रचनात्मक कार्यक्रम :**

गांधी के लिए स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का पर्याय नहीं था। उनकी दृष्टि में स्वराज का अर्थ था—आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक आत्मनिर्भरता। गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज की इसी व्यापक अवधारणा पर आधारित था। जैसा कि गांधी के लेखन के एक प्रामाणिक संकलन में उल्लेखित है, "रचनात्मक कार्यक्रम को दूसरे शब्दों में अधिक और उचित रीति से सत्य और अहिंसात्मक साधनों द्वारा पूर्ण स्वराज्य की, यानी पूरी-पूरी आज़ादी की रचना कहा जा सकता है"।

गांधी का मानना था कि प्रत्येक सुदृढ़ राजनीतिक दर्शन के पीछे एक संगत रचनात्मक कार्यक्रम होना चाहिए, जो नागरिक समाज के सदस्यों के जीवन की बेहतरी में योगदान करे। उनके अनुसार, राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय और विकास पहुँचाना है।[3]

**सत्य और अहिंसा का व्यावहारिक स्वरूप :**

गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग था। गांधी का मानना था कि सत्याग्रह केवल विरोध और प्रतिरोध का साधन नहीं है, इसके लिए रचनात्मक


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कार्यक्रम में प्रशिक्षण आवश्यक था। जिस प्रकार सैन्य विद्रोह के लिए हथियार चलाने का प्रशिक्षण आवश्यक होता है, उसी प्रकार सत्याग्रह के लिए रचनात्मक कार्यक्रम में प्रशिक्षण अपरिहार्य था।[4] यह विचार वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिक है, जब सामाजिक आंदोलनों को केवल विरोध के बजाय रचनात्मक विकल्प प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

**रचनात्मक कार्यक्रम के प्रमुख आयाम और वर्तमान प्रासंगिकता**

**1. सांप्रदायिक एकता :** गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का सर्वप्रथम और महत्तम बिंदु सांप्रदायिक एकता था। गांधी के अनुसार, सांप्रदायिक एकता का अर्थ केवल राजनीतिक एकता नहीं, बल्कि "दिलों की अटूट एकता" है।[5] वर्तमान भारत में बढ़ते सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, धार्मिक असहिष्णुता और पहचान की राजनीति के संदर्भ में गांधी का यह आह्वान पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। गांधी ने स्वयं उपवास और प्रार्थना सभाओं के माध्यम से सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया था, जो आज भी अनुकरणीय है।

समकालीन अध्ययनों में इस बात पर बल दिया गया है कि सांप्रदायिक एकता को बढ़ावा देने हेतु अंतर-धार्मिक संवाद, पारस्परिक सम्मान और शिक्षा के माध्यम से सहिष्णुता के मूल्यों का प्रसार आवश्यक है।[6] गांधी का सांप्रदायिक एकता का मॉडल आज की पहचान-आधारित राजनीति का एक सशक्त विकल्प प्रस्तुत करता है।

**2. अस्पृश्यता उन्मूलन :** गांधी ने अस्पृश्यता को भारतीय समाज का कलंक बताया और इसके उन्मूलन को अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बनाया। उन्होंने अछूत समझे जाने वाले लोगों के लिए 'हरिजन' (ईश्वर की संतान) शब्द का प्रयोग किया और 1932 में पूना पैक्ट के बाद 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की।[7] उन्होंने मंदिरों को हरिजनों के लिए खोलने, सार्वजनिक कुओं के उपयोग और सामाजिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

वर्तमान में यद्यपि संवैधानिक प्रावधानों द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन कर दिया गया है, तथापि सामाजिक भेदभाव और जाति-आधारित हिंसा के मामले अभी भी सामने आते हैं। गांधी का यह कार्यक्रम आज भी जाति-आधारित भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। हाल के एक शोधपत्र में यह तर्क दिया गया है कि गांधी का जाति-विरोधी दृष्टिकोण समकालीन सामाजिक न्याय आंदोलनों के लिए एक नैतिक आधार प्रदान करता है।[8]

**3. खादी और चरखा :** गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का केंद्र बिंदु खादी और चरखा था। उनके शब्दों में, "रचनात्मक कार्यक्रम का केंद्र हमेशा चरखा है, जिसके चारों ओर सभी गतिविधियाँ घूमती हैं"।[9] खादी केवल एक वस्त्र नहीं, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक थी। ब्रिटिश शासन के दौरान जब भारत में विदेशी वस्त्रों की बाढ़ आ गई थी और स्थानीय उद्योग नष्ट हो रहे थे, गांधी ने खादी के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्जीवन का प्रयास किया।[10]

वर्तमान समय में 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे अभियान गांधी के खादी आंदोलन की भावना के ही आधुनिक संस्करण हैं। खादी और ग्रामोद्योग आयोग


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

(KVIC) आज लाखों ग्रामीणों को रोजगार प्रदान कर रहा है, जो गांधी की आर्थिक दृष्टि की प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

**4. ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण :** गांधी का ग्राम स्वराज का सिद्धांत उनके राजनीतिक चिंतन का सबसे मौलिक योगदान है। उनका दृढ़ विश्वास था कि आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का विकेंद्रीकरण ग्राम पंचायतों के माध्यम से होना चाहिए। उनके अनुसार, "भारत अपने गाँवों में बसता है" और वास्तविक स्वराज तभी संभव है जब गाँव आत्मनिर्भर और स्वशासी बनें।[11]

भारतीय संविधान में 73वें और 74वें संशोधनों के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान करना गांधी के ग्राम स्वराज के सिद्धांत की स्वीकृति है। तथापि, वर्तमान में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के समक्ष संसाधनों की कमी, राजनीतिक हस्तक्षेप और नौकरशाही बाधाओं की चुनौतियाँ विद्यमान हैं। प्रोफेसर आनंद कुमार के अनुसार, स्वराज-रचना और राष्ट्र-निर्माण के अधूरेपन को रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए दूर करना ही युगधर्म है।[12]

**5. बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) :** गांधी की शिक्षा दृष्टि, जिसे 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' कहा जाता है, उनके रचनात्मक कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक थी। गांधी का मानना था कि शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समग्र विकास—शारीरिक, मानसिक और नैतिक—का माध्यम होनी चाहिए। उनकी शिक्षा प्रणाली में उत्पादक श्रम को केंद्रीय स्थान दिया गया था।[13]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गांधी की शिक्षा दृष्टि से प्रभावित है। इसमें समग्र विकास, व्यावसायिक शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा और नैतिक मूल्यों पर बल दिया गया है, जो गांधी की नई तालीम की अवधारणा के अनुरूप है। गोस्वामी के एक तुलनात्मक अध्ययन में यह पाया गया है कि नई तालीम और एनईपी 2020 यद्यपि भिन्न संदर्भों में विकसित हुई हैं, तथापि दोनों का उद्देश्य समग्र विकास और व्यक्ति का सशक्तिकरण है।[14]

**6. प्रौढ़ शिक्षा और स्त्री शिक्षा :** गांधी ने प्रौढ़ शिक्षा को जन जागृति का साधन माना। उनके रचनात्मक कार्यक्रम में प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य व्यापक स्तर पर जन जागरूकता फैलाना था। इसी प्रकार, स्त्री शिक्षा को भी उन्होंने राष्ट्र निर्माण का अनिवार्य अंग बताया। गांधी का मानना था कि महिलाओं को शिक्षित किए बिना समाज की उन्नति असंभव है।

वर्तमान में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'साक्षर भारत' जैसे सरकारी कार्यक्रम गांधी की इसी सोच का विस्तार हैं। महिला साक्षरता दर में वृद्धि, उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और कार्यबल में उनका योगदान इस बात का प्रमाण है कि गांधी की दृष्टि सही दिशा में अग्रसर है।

**7. महिला सशक्तिकरण :** गांधी का महिला सशक्तिकरण का दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील था। उन्होंने महिलाओं को केवल सशक्तिकरण की वस्तु के रूप में नहीं देखा, बल्कि यह माना कि महिलाएँ स्वयं इतनी सबल हैं कि संपूर्ण मानव जाति के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उन्होंने


© Copyright @ Authors

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की और उन्हें सार्वजनिक जीवन में समान अवसर प्रदान करने का आग्रह किया।

गांधी की दृष्टि में महिला सशक्तिकरण का अंतिम लक्ष्य 'सर्वोदय'—सबका कल्याण—था, जो आर्थिक क्षेत्र में सहयोग और ट्रस्टीशिप, राजनीतिक क्षेत्र में समान भागीदारी और सामाजिक क्षेत्र में पारस्परिक सहायता के माध्यम से प्राप्त किया जाना था।[15] संविधान के 73वें और 74वें संशोधनों के माध्यम से पंचायतों और नगरपालिकाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का प्रावधान इसी दृष्टि का संवैधानिक स्वरूप है।

**8. आर्थिक समानता :** गांधी के लिए आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज की "मुख्य चाभी" थी।[16] उनका मानना था कि जब तक समाज में आर्थिक विषमता बनी रहेगी, तब तक सच्ची स्वतंत्रता संभव नहीं है। उन्होंने 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार संपन्न वर्ग को अपनी संपत्ति का उपयोग समाज के हित में करना चाहिए।

वर्तमान में बढ़ती आर्थिक असमानता—जहाँ देश की 1% जनसंख्या के पास कुल संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा है—गांधी की आर्थिक समानता की चिंता को और प्रासंगिक बनाती है। सरकारी योजनाएँ जैसे 'प्रधानमंत्री जन धन योजना', 'मुद्रा योजना' और विभिन्न सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम गांधी की आर्थिक समानता की दृष्टि को साकार करने के प्रयास हैं, यद्यपि इनकी प्रभावशीलता पर प्रश्न उठते रहते हैं।

**9. स्वास्थ्य और स्वच्छता :** गांधी ने स्वास्थ्य और स्वच्छता को रचनात्मक कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग बनाया। उन्होंने कहा कि "मन चंगा है तो शरीर भी चंगा है" और मन और शरीर के बीच अटूट संबंध पर बल दिया।[17] गांव की सफाई, व्यक्तिगत स्वच्छता और आरोग्य के नियमों की शिक्षा उनके कार्यक्रम के अनिवार्य अंग थे।

गांधी का स्वच्छता पर बल आज 'स्वच्छ भारत मिशन' के रूप में जीवंत है। इस अभियान ने देश भर में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाई है और करोड़ों शौचालयों का निर्माण करवाया है। गांधी की स्वास्थ्य संबंधी सलाह—शाकाहार, संयमित भोजन, प्राकृतिक चिकित्सा—आज के जीवनशैली रोगों के संदर्भ में और भी महत्वपूर्ण हो गई है।[18]

**10. पर्यावरण संरक्षण :** यद्यपि गांधी के समय में पर्यावरणवाद एक स्थापित विमर्श नहीं था, तथापि उनके विचार और कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण की गहरी चिंता प्रकट करते हैं। 'डाउन टू अर्थ' पत्रिका के अनुसार, "गांधी को पर्यावरणवाद से पहले का पर्यावरणविद कहा जा सकता है"।[19] उनके रचनात्मक कार्यक्रमों में निहित सादा जीवन, स्थानीय उत्पादन और उपभोग, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, और विकेंद्रीकरण की अवधारणाएँ आज के सतत विकास के लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप हैं।

गांधी की पर्यावरणीय दृष्टि अस्तित्वमूलक एकता (Existential Oneness) के विचार पर आधारित थी, जो अहिंसा को एक वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में अभिव्यक्त करती है। इस दृष्टि में सभी जीवों और प्राकृतिक तत्वों के बीच अंतर्संबंधों की स्वीकारोक्ति निहित है।[20] जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की


© Copyright @ Authors

हानि और प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन के युग में गांधी का यह समग्र दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है।

**वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में रचनात्मक कार्यक्रमों की भूमिका**

**गांधीवादी आंदोलन और वर्तमान शासन :**

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की भूमिका को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि समकालीन शासन और नीतियाँ गांधीवादी सिद्धांतों से किस प्रकार प्रभावित हैं। 'विकसित भारत 2047' की संकल्पना गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम के सिद्धांतों से गहरे जुड़ी हुई है। कुमार के अनुसार, गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए एक प्रभावी मार्गदर्शक का काम कर सकते हैं। इसमें स्वरोजगार, विकेंद्रीकरण और सकारात्मक सामूहिकता जैसे तत्व शामिल हैं।

**सामाजिक न्याय और समावेशी विकास :**

गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम समाज के सबसे कमजोर वर्गों—दलितों, आदिवासियों, महिलाओं और गरीबों—के उत्थान पर केंद्रित था। वर्तमान में जब 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का नारा दिया जाता है, तो यह गांधी के 'सर्वोदय' और 'अंत्योदय' के सिद्धांतों की प्रतिध्वनि है। डॉ. धनंजय राय के अनुसार, गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम राजनीति की पारंपरिक अवधारणा का विस्तार करता है और इसमें सांप्रदायिक एकता, महिला सशक्तिकरण, आदिवासियों की चिंताएँ, किसानों की समस्याएँ, अस्पृश्यता उन्मूलन और कुष्ठ रोग के प्रति जागरूकता जैसे विषय शामिल हैं।[2]

**ग्रामीण विकास और कृषि संकट :**

वर्तमान भारत का सबसे गंभीर संकट कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। किसान आत्महत्या, बढ़ती ऋणग्रस्तता, भूमि अधिग्रहण और ग्रामीण-शहरी पलायन जैसी समस्याएँ गांधी के ग्राम स्वराज की प्रासंगिकता को रेखांकित करती हैं। गांधी का मानना था कि प्रत्येक गाँव को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन स्वयं करना चाहिए और शहरों पर निर्भरता कम करनी चाहिए। यह विचार आज के 'स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला' और 'कृषि-आधारित उद्योग' के मॉडल में प्रतिबिंबित होता है।

**राजनीतिक आचरण और नैतिकता :**

गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम राजनीतिक आचरण और नैतिकता है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में बढ़ते अपराधीकरण, धनबल, जातीय-धार्मिक ध्रुवीकरण और चुनावी कदाचार के संदर्भ में गांधी का सादगी, ईमानदारी और नैतिक राजनीति का आग्रह अत्यंत प्रासंगिक है। गांधी का मानना था कि साध्य और साधन दोनों शुद्ध होने चाहिए—एक ऐसा सिद्धांत जो वर्तमान 'परिणामवादी' राजनीति के लिए चुनौती है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

## आलोचनाएँ और सीमाएँ

### आलोचनात्मक दृष्टिकोण

गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम की कई आलोचनाएँ भी की जाती रही हैं। सुरेन मुरारजी जैसे मार्क्सवादी आलोचकों ने इसे 'चरखा राजनीति' की संज्ञा देते हुए यह तर्क दिया कि यह कार्यक्रम वास्तव में पूँजीवादी आधुनिकीकरण का विरोध करते हुए एक पूर्व-औद्योगिक आर्थिक ढाँचे की ओर लौटने का प्रयास था। मुरारजी के अनुसार, "यह संभव नहीं है कि जनता पर कोई ऐसा कार्यक्रम थोपा जाए जो किसी मूलभूत जन-आकांक्षा को किसी रूप में शांत न करता हो"।[23]

### वर्तमान चुनौतियाँ और गांधीवादी प्रतिक्रिया

कुछ विद्वानों का मत है कि बदलते सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों में गांधीवादी संस्थाएँ और कुछ रचनात्मक कार्यक्रम अप्रचलित होते जा रहे हैं।[24] तेजी से होते शहरीकरण, वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति के युग में चरखा और खादी जैसे प्रतीक अपनी प्रभावशीलता खो सकते हैं। तथापि, इन प्रतीकों के पीछे निहित सिद्धांत—आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण, श्रम की गरिमा—सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे।

### सीमाओं का सामना और पुनर्व्याख्या

गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को वर्तमान संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, खादी को केवल हस्तनिर्मित वस्त्र के रूप में नहीं, बल्कि स्थानीय उत्पादन और टिकाऊ फैशन के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। ग्राम स्वराज को डिजिटल पंचायतों और स्थानीय स्वशासन के आधुनिक मॉडलों से जोड़ा जा सकता है। नई तालीम को कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा के वर्तमान कार्यक्रमों के साथ समन्वित किया जा सकता है।

## निष्कर्ष

गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम केवल ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं हैं, वे एक जीवंत दर्शन हैं जो वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में भी मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। सांप्रदायिक सद्भाव, जातिगत समानता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण—ये सभी विषय आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने गांधी के समय में थे।

वर्तमान अस्थिरता के युग में, जहाँ एक ओर संपूर्ण विश्व भौतिकतावाद के जाल में फँसता जा रहा है और लालच की परिणति युद्ध तक पहुँच चुकी है, मानवीय मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक है। गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम यह सिखाता है कि राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम होनी चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि गांधी के इन कार्यक्रमों की समकालीन पुनर्व्याख्या की जाए और उन्हें वर्तमान चुनौतियों के समाधान में उपयोग किया जाए। जैसा कि गांधी ने कहा था, "रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आजादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है"—


© Copyright @ Authors

यह कथन आज भी उतना ही सार्थक है जितना 1945 में था। भारत जैसे विविधतापूर्ण और जटिल लोकतंत्र के लिए गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम एक ऐसे भविष्य का मार्गदर्शन कर सकते हैं जहाँ विकास समावेशी हो, राजनीति नैतिक हो और समाज न्यायपूर्ण हो।

## संदर्भ सूची :


1. शर्मा, पूजा, "वर्तमान में गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रासंगिकता", महात्मा गाँधी: समसामयिक प्रासंगिकता, सोशल रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली, 2023, पृ. 16-25
2. सिंह, मनोज कुमार, "भारत के मुक्ति संग्राम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), खंड 10, अंक 5, मई 2022, पृ. 6-22
3. पारेल, एंथनी जे. (सं.), "Constructive Programme: Its Meaning and Place (1941, rev. 1945)", गांधी: 'हिंद स्वराज' एंड अदर राइटिंग्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2009, पृ. 13-17
4. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, "इकाई 8: स्वराज", एमजीपीई-13, ई-ज्ञानकोश, 2023, पृ. 13-14
5. दृष्टि आईएएस, "मेन्स प्रैक्टिस प्रश्न: असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम", 31 जनवरी 2022, पृ. 18-19
6. पोलसाइ इंस्टीट्यूट, "Building Gandhi's Ideal Society: The Role of Constructive Programme", जुलाई 2025, पृ. 22-25
7. दृष्टि आईएएस, पूर्व उद्धृत 23-24
8. रंजन, रूपेश, "Gandhi's Constructive Programme: A Blueprint for Social Transformation", एकेडेमिया.एडु, 2025, पृ.24-26
9. मुरारजी, सुरेन, "Politics of the Indian Bourgeoisie", द न्यू इंटरनेशनल, खंड 12, अंक 10, दिसंबर 1946, पृ. 6-7
10. पोलसाइ इंस्टीट्यूट, पूर्व उद्धृत पृ. 35-39
11. गांधी, मोहनदास करमचंद, Village Swaraj, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1962, पृ. 4-7
12. कुमार, आनंद, "स्वराज-रचना और राष्ट्र-निर्माण का गांधी-मार्ग", ग्लोबल गांधी.कॉम, 22 नवंबर 2024, पृ. 10-11
13. गोस्वामी, सरिता, "महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) की अवधारणा और एनईपी 2020: एक व्यापक समीक्षा", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड मल्टीडिसिप्लिनरी ट्रेंड्स (IJARMT), खंड 2, अंक 2, अप्रैल-जून 2025, पृ. 5-6
14. वही पृ. 17-19



© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

15. गंगराडे, के.डी., "Gandhi and Empowerment of Women – Miles to Go", एमकेगांधी.ऑर्ग, 2023, पृ. 30-31
16. जनसत्ता, "Gandhi Jayanti 2019: ऐसी थी बापू की आर्थिक सोच, शोषण मुक्त समाज के लिए आर्थिक समानता पर था जोर", 2 अक्टूबर 2019, पृ. 18-20
17. गांधी, मोहनदास करमचंद, "आरोग्य के नियमों की शिक्षा", रचनात्मक कार्यक्रम: उसका रहस्य और स्थान, 1945, एमकेगांधी.ऑर्ग, पृ. 16-18
18. नारायण हेल्थ, "Health Lessons from Mahatma Gandhi: 4 Tips to Kick-start a Healthy Life", 3 अक्टूबर 2013
19. डाउन टू अर्थ, "गांधी जयंती पर विशेष: पर्यावरण बचाने के लिए एकमात्र विकल्प है गांधी की राह", 1 अक्टूबर 2019, पृ. 11-12
20. जोशी, शंभू, "गांधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, खंड 3, अंक 10, अक्टूबर 2016, पृ. 9-11
21. कुमार, रवि, "Concept of Developed India: With Special Reference to Mahatma Gandhi's Constructive Programme", RRJSS, खंड 5, अंक 2, 2025, पृ. 12-15
22. राय, धनंजय, "A Talk on 'Gandhi's Forgotten Other: Reading Immediacy in Constructive Programme'", क्रेआ यूनिवर्सिटी, 11 सितंबर 2024, पृ. 14-19
23. मुरारजी, सुरेन, पूर्व उद्धृत 27-30
24. गुजरात विद्यापीठ जर्नल, "Zest for a Better World Order: Gandhian Humanism in Praxis", खंड 86, अंक 1, दिसंबर 2024, पृ. 15-18


© Copyright @ Authors